एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

बाढ़ के दौरान पशुओं के प्रति किसानों के लिए दिशा-निर्देश

(*नवीन कुमार एवं अमित कुमार)
लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, हिसार- 125004 (हरियाणा)
*संवादी लेखक का ईमेल पता: nknaveen420116@gmail.com

प्रकृति के अनियंत्रित आवेगों में एक है बाढ़। यह आपदा भारतीय किसानों के लिए विशेष रूप से खतरनाक होती है क्योंकि इसके दौरान न केवल मानवों को अपने जीवन की खतरा होता है बल्कि पशुओं की सुरक्षा को भी ध्यान में रखना बहुत महत्वपूर्ण होता है। बाढ़ के समय पशुओं को बचाने के लिए कुछ महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश हैं जो किसानों को पशुओं के प्रति जिम्मेदारीपूर्वक आवश्यक कदम उठाने में मदद करेंगे।

- पशुओं को सुरक्षित स्थान पर ले जाएं: बाढ़ के समय पशुओं की सुरक्षा के लिए सबसे महत्वपूर्ण है कि आप उन्हें सुरक्षित स्थान पर ले जाएं। बाढ़ के आने से पहले ही अपने फसलों को उगाईं और अपने पशुओं को सुरक्षित जगह पर ले जाएं।
- खाद्य सामग्री की व्यवस्था करें: बाढ़ के दौरान पशुओं को पूरे खाने-पीने की सामग्री की व्यवस्था करना भी महत्वपूर्ण है। सूखे चारे पर 10 प्रतिशत शीरा या कच्चे गुड़ के घोल का छिड़काव करें और पशुओं के रख-रखाव के लिए 2 प्रतिशत यूरिया या सूखी तूड़ी को 4 प्रतिशत यूरिया से उपचारित करें, एक सप्ताह के लिए वायुरोधी स्थिति में संग्रहित करें और जानवरों को खिलाएं।
- उत्पादन करने वाले पशुओं के उत्पादन के न्यूनतम स्तर को बनाए रखने के लिए व आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उनको उनकी आवश्यकता का 50 प्रतिशत चारा उपलब्ध कराया जाना चाहिए अन्य पशुओं के अस्तित्व को सुनिश्चित करने के लिए उनके रख-रखाव हेतू राशन प्रदान किया जाए।
- चारे की कमी की अवधि के दौरान संरक्षित चारा (हे या/व साइलेज) पशुओं को खिलाना चाहिए।
- पशुओं को रख-रखाव आहार के रूप में सूखे और गिरे हुए पेड़ के पत्तों को 20 प्रतिशत चोकर, 10 प्रतिशत गुड़, 2 प्रतिशत यूरिया, 2 प्रतिशत खनिज मिश्रण और 1 प्रतिशत नमक के साथ मिलाकर भी खिलाया जा सकता है। क्षेत्र में (मृदा में) या चारे में किन पोषकतत्वों कमी है, इसके आधार पर पशुओं को मिनरल सप्लीमेंट देना चाहिए।
- प्रति वयस्क पशु के लिए 40-50 ग्राम नमक और छोटे जुगाली करने वाले व बछड़ों के लिए 10-20 ग्राम नमक प्रतिदिन फीड के माध्यम से प्रदान किया जाना चाहिए।
- पानी की व्यवस्था करें: बाढ़ के समय पानी की व्यवस्था भी महत्वपूर्ण है। पशुओं के पानी के लिए साफ और पवित्र जल का इस्तेमाल करें। ध्यान रखें कि पानी का स्तर इतना न हो कि पशुओं को डूबने का खतरा हो।
- वैक्सीनेशन की जांच करें: अपने पशुओं की वैक्सीनेशन की जांच करें और उन्हें अपडेट करें ताकि वे बाढ़ के समय भी सुरक्षित रहें।
- गोबर, मूत्र एवं मृत पशुओं का उचित निस्तारण किया जाए।

- बाढ़ के दौरान, मक्खी और मच्छर की समस्या की संभावना बहुत अधिक होती है, इसलिए किसी भी बीमारी के प्रकोप को रोकने के लिए आवश्यक कार्रवाई करने की सलाह दी जाती है।
- ब्लीचिंग पाउडर या चूने के प्रयोग से पशु शेड को कीटाणुरहित करें।
- पशुओं को बाध्य न करें: बाढ़ के समय पशुओं को बाध्य न करें, बल्कि उन्हें स्वतंत्रता दें ताकि वे अपने लिए सुरक्षित स्थान ढूंढ सकें।
- पशुओं की सेहत का ध्यान रखें: बाढ़ के समय पशुओं की सेहत का विशेष ध्यान रखें। उन्हें रोज़ाना चेक करें और अगर आपको किसी तरह की बीमारी के लक्षण दिखें तो तुरंत वेटरिनरी चिकित्सक से संपर्क करें।
- छोटे पशुओं की सुरक्षा: अगर आपके पास छोटे बच्चे पशु हैं, तो उन्हें भी सुरक्षित स्थान पर रखें। छोटे पशुओं को बाढ़ के पानी से दूर रखने का ध्यान रखें।
- संपर्क बनाएं: बाढ़ के समय पशुओं के साथ संपर्क बनाएं ताकि आप उन्हें सही समय पर सही जगह पर ले जा सकें।
- पशुओं के लिए आपदा प्रबंधन योजना बनाएं: अगर आप बाढ़ के इलाके में रहते हैं, तो पशुओं के लिए आपदा प्रबंधन योजना बनाना भी महत्वपूर्ण है। इसमें पशुओं को सुरक्षित रखने और उन्हें आपदा से बचाने के लिए कदम शामिल होंगे।

बाढ़ के दौरान पशुओं को सुरक्षित रखने के लिए उपरोक्त दिशा-निर्देश किसानों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। बाढ़ के प्रकोप से पशुओं की जान बचाना विशेष जिम्मेदारी के साथ किया जाना चाहिए। किसानों को पशुओं के साथ संबंध बनाकर उन्हें सुरक्षित स्थान पर ले जाना चाहिए ताकि उन्हें किसी भी खतरे का सामना न करना पड़े। इससे न केवल पशुओं की सुरक्षा होगी, बल्कि किसानों को भी अधिक परिवारिक सुखद भावना होगी।